International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 969-970

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 969-970
www.allresearchjournal.com
Received: 21-05-2017
Accepted: 22-06-2017

Pooja
Assistant Professor, Department of Political Science South Point Degree College, Sonipat, Haryana, India

Correspondence
Pooja
Assistant Professor, Department of Political Science South Point Degree College, Sonipat, Haryana, India

भारत में दलितों की स्थिति

Pooja

सारांश
आज भारत को आजाद हुए काफी समय बीत चुका है। फिर भी हमारे समाज में दलितों को तुच्छ व हीन दृष्टि से देखा जाता है। दलित व्यक्ति आज भी आजादी के लिए रोता है। वह कहता है, चाहे भारत आज आजाद हो चुका है लेकिन दलित अब भी गुलाम हैं। वह सवर्णों के शिकार होते जा रहे हैं, उन्हें दिन–प्रतिदिन अनेकों समस्याओं को सहना पड़ता है। सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो दलित हर तरह के सुख–सुविधाओं, उल्लास, समानता, स्वतन्त्रता, मौलिक अधिकार व कर्तव्यों आदि सब से अछूते हैं। हर क्षेत्र में उनके मान–सम्मान को ठेस पहुँचती आई है। भारतीय समाज की लोक–तांत्रिक व्यवस्था में अपनी आस्था रखने वाले हर व्यक्ति के लिए समानता, स्वतन्त्रता, बंधुता और सामाजिक लोकतंत्र का प्रमुख अधिकार है। वह मान–सम्मान के साथ कही भी रह सकते हैं।

मूल शब्दः दलित मान–सम्मान, सामाजिक जीवन, समानता

प्रस्तावना
विश्व के प्रत्येक देश में ऐसे अनेकों लोग रहते हैं जो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक आदि क्षेत्रों में अन्य लोगों के मुकाबले में पिछड़े हुए होते हैं और अन्य सशक्त वर्गों द्वारा शोषित होता है। भारत में ऐसे लोगों को दलित कहा जाता है।

दलित का अर्थः– 'दबा हुआ या कुचला हुआ''।
समाज का वह वर्ग जिसको समाज के उच्च वर्गों द्वारा शोषित किया गया हो, जिनके अधिकार छीन लिये गए हैं, जिनको हीन समझा जाता है। ऐसा नहीं भारतीय स्वतन्त्रता–संग्राम में किसी एक जाति विशेष ने ही भाग लिया बल्कि सभी जातियों ने इसमें बढ़–चढ़कर भाग लिया है, चाहे वह किसी भी जाति से क्यों न हो। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अपना सब कुछ दाव पद लगा दिया। वह संघर्ष करने में पीछे नहीं हटे। उसके लिए उन्होंने अपने प्राणों तक को न्योछावर कर दिया। अनेक उदाहरण इस बात की पुष्टि करते हैं। 'कर्मकाण्ड़ी ब्राह्मण मंगल पांड़े कलकता के निकट बैरकपुर छावनी में अंग्रेजी सेना में एक सैनिक था। इसी छावनी में भंगी भी एक कर्मचारी था। प्यास लगने के कारण इस कर्मचारी ने पानी पीने के लिए मंगल पांडे से लोटा मांगा। पांड़े ने लोटा देने से इंकार कर दिया। प्यास से बौखलाए भंगी ने उस सैनिक से कहा–''बड़ा आया ब्राह्मण का बेटा। जिन कारतूसों को तुम उपयोग करते हो। उन पर 'गाय' व 'सुअर' की चर्बी लगाई जाती है, जिन्हें तुम अपने दातों से तोडकर बंदूक में डालते हो। उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ चला जाता है। इस तरह यह सुनकर मंगल पांडे ने 1 मार्च 1857 को सुबह की परेड से अलग होकर अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह शुरू कर दिया। अंग्रेजों ने उसे पकड़कर फांसी लगा दी। फांसी का फंदा भंगी के गले में भी डाला गया। स्वतन्त्रता का सेहरा मंगल पांडे के सिर बांधा। ''यहाँ यह बात साबित करती है कि एक देश के दोनों व्याक्ति होते हुए इतना भेदभाव था।
डॉक्टर अम्बेडकर महार जाति से संबधित थे और उनकी जाति को और उनको अधूत समझा जाता था। अम्बेडकर जी के साथ स्कूल में अधूतों जैसा व्यवहार किया जाता था' उन्हें कक्षा के अन्य छात्रों की तरह न उठने–बैठने दिया जाता था और न पूजा–अर्चना करने दी जाती थी। संस्कृत के शिक्षक ने उन्हें संस्कृत पढ़ाने से मना कर दिया क्योंकि संस्कृत अध्यापक के अनुसार संस्कृत एक दैवीय भाषा है जिसे पढ़ने का अधिकार अधूतों व दलितों को नहीं है। इसलिए डॉक्टर अम्बेडकर ने न चाहते हुए भी संस्कृत के स्थान पर पारसी पढ़नी पड़ी। इन सभी अपमानों को सहते और सोचते हुए अम्बेडकर जी ने दलितों व अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण का प्रावधान करवाया जो आज भी हमारी सरकार द्वारा इस नियम की पालना की जाती है।

हरियाणा एक शांत प्रदेश के रूप में जाना जाता है। परंतु दलित उत्पीड़न के रूप में यह भी अछूता नहीं रह पाया। आज छोटी–छोटी बातों पर दबंग लोग दलितों को मारते पीटते हैं। उनको घर से बेघर करते हैं। वहाँ के दलितों को वहां से पलायन करना पड़ा। हरियाणा में दलित उत्पीड़न की बढ़ती वारदातों के पीछे गरीबी व अशिक्षा के साथ–साथ कुछ प्रतिशत दलितों का मान–सम्मान से जीना और संविधान में दिए गए अधिकारों के सहारे अपने आर्थिक स्तर की उन्नति को भी माना गया है। 2010 में हिसार जिले के गाँव मिर्चपुर में सवर्णों ने दलित को कभी भी प्रगति करते हुए देखना नहीं चाहा। सवर्णों ने बस्ती में आगजनी की और पित्ता पुत्र को जिंदा जला दिया था। हिसार के दौलतपुर गाँव में दबंगों के उस हैरतअंगेज कारनामे को देखकर पूरी दूनिया सन्न रह गई थी। जिसमें उन्होंने खेत में रखे घड़े से पानी पीने के कारण एक दलित युवा मजदूर का हाथ काट डाला था।

भारतीय समाज में दलित की राजनीति में शुरूआत 1930 से होती है। जब डॉक्टर अम्बेडकर नेन दलित वर्गों के राजनीतिक अधिकारों का सवाल उठाया था। अस्पृश्यता व जातिय भेदभाव के खिलाफ सामाजिक आन्दोलनों की असफलताओं ने राजनीतिक आन्दोलन की आधारशिला रखी थी। राजनीति व साहित्य एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। दलित राजनीति की सामाजिक न्याय की अवधारणा ने कुछ–न–कुछ योगदान दलित साहित्य को दिया है। राष्ट्रीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में उनकी भागीदारी नगण्य है। यह स्थिति निश्चित रूप से संतोषजनक नहीं है कि ''राष्ट्रीय स्तर की सभी पत्र–पत्रिकाओं का संपादन और प्रकाशन गैर–दलितों के हाथों में है।

भारत में पहली लोकसभा का चुनाव 1952 में हुआ था। उस समय दलित राजनीति कोई खास नहीं थी। दलितों और आदिवासियों में वोट की कीमत का अहसास नाममात्र ही था। हालांकि उस समय बाबा साहेब अम्बेडकर जी जीवित थे। फिर भी इस समाज में जागृति का बढ़ा ही अभाव था। समय बीतने के साथ–साथ समाज में जाग्रति आती गई और दलित राजनीति का धीरे–धीरे आगे बढ़ना शुरू हुआ।

अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालयों के लिए 2014 में प्रोफेसर अमिताभ कुंडु ने एक रिपोर्ट तैयार की थी। इसमें बताया गया था कि आज देश में एक तिहाई दलितों के पास जीवन की सबसे कम जरूरतों को पूरा करने वाली सुविधाएं नहीं है। गांवों में 45 फीसदी दलित परिवारों के पास जमीन नहीं है और वह छोटी–मोटी मजदूरी कर गुजारा करते हैं। हांलाकि सरकार ने साल 2016–17 में दलितों के उपर उठाने के लिए 38′832 करोड़ रूपये का आवंटन किया है। यह आंकड़ा पिछले बजट में 30 हजार करोड़ था।

हमें सर्वे से पता चलता है कि दलित समाज के समक्ष अनेकों चुनौतियाँ है। जिनका समाधान बहुत जरूरी है। समाधान ऐसा हो तो सभी दलितों को सामाजिक' धार्मिक' राजनीतिक और सांस्कृतिक जैसे मुद्यों पर प्रकाश डाला जा सकता है। इनसे पहले शिक्षा संबधित कितने दलितों को शिक्षा की सुविधाएँ दी जाती है या फिर नहीं दी जाती है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान में दलितों की स्थिति को सुधारने हेतु अनेक कदम उठाये गये हैं' जिससे दलितों को आत्म–सम्मान बल तो मिला है जो सदियों से चली आ रही मानसिक गुलामी की छाया में अपना अस्तित्व ही भूल गये थे। ऐसा करके ही हम सामाजिक परिवर्तन के अपने दायित्व को शिक्षा के माध्यम से पूरा कर सकेंगे जो समय की मांग भी है कि 'पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चे अवर्णो में से कितने निकले हैं और सवर्णो के कितने मौजूद हैं?

आजादी के इतने अंतराल के बाद भी भारत विकसित नहीं हुआ है। आज भी दलितों को वो मान–सम्मान नहीं मिला जो उनको मिलना चाहिए। जिनके वे पूरे हकदार है। अगर इस सप्रंदाय की इस खाई को प्रेम–भाव व बंधुता से भर दे तो कोई भी इस समाज व देश में अपने आपको अछूत नहीं कहेगा। और भारत देश एकात्कम अपना लेगा और देश प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त हो सकेगा।

अंत कहा जा सकता है कि दलितों के साथ–साथ अन्य सभी जातियों को भी एक साथ जाति प्रथा का विरोध करना होगा तभी जाति प्रथा एंव जातिवाद को मिटाया जा सकता है अन्यथा नहीं।

संदर्भ सूची

1. दलित विमर्श, साहित्य के आइने में, साहित्य संस्थान 'प्रकाशक' जय प्रकाश कर्दम p–142–143।
2. दलित विमर्श, साहित्य के आइने में, साहित्य संस्थान 'प्रकाशक' जय प्रकाश कर्दम p–132।
3. दैनिक भास्कर, नवम्बर 2016, p–1।
4. दैनिक भास्कर, नवम्बर 2016, p–5।
5. दैनिक भास्कर, मार्च 2017, p–2–3।
6. भारतीय राजनीतिक चिंतक, प्रकाशक–मतहौत्ता, 2012, p–270।
7. भारतीय राजनीति, प्रकाशक ज्योति, 2017, p–137।
8. भारत का संविधान, प्रकाशक–सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, 2016, p–341।
9. भारत का संविधान, प्रकाशक–सेन्ट्रल लॉ, एजेन्सी, 2016, p–602।
10. इन्टरनेट।